© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 10 , Issue : 04 | October - December 2023

भारतीय विदेश नीति में हिन्द महासागर का महत्त्व

शोध निर्देशक
डॉ० सी. बी. सैनी
राजनीति विज्ञान एंव लोकप्रशासन
विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
रोहतक

शोधार्थी
अमित मेहता
राजनीति विज्ञान एंव लोकप्रशासन
विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
रोहतक

सारांशः– प्रस्तुत शोध में भारतीय विदेश नीति में हिन्द महासागर के महत्व के बारें में बताया गया है। सन् 1900 की शुरूआत से न केवल भौगोलिक बल्कि अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की रूपरेखा को पुनः आकार प्रदान करने के लिए विश्व में महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। कई देशों का निर्माण दो विश्व युद्धों के बाद हुआ है। अब सोवियत संघ जैसे संघ अस्तित्व में नहीं है। तत्कालीन औपनिवेशिक शक्तियों के बीच समझौते ने विश्व के मानचित्र को फिरसे आकार प्रदान किया। उनकी विरासत आज भी अंतर्राजीय संबंधों को सता रही है। इन सैन्य गुटों से निपटने के लिए भारत के साथ अपने संस्थापकों सहित गुट निरपेक्ष आन्दोलन ने आकार लिया और जिस गुट निरपेक्ष आंदोलन को 1961 में हम जानते थे, वह अब अस्तित्व में नहीं है।

इतिहास की दिशा का निर्धारण यूरोपीय शक्ति द्वारा हुआ था और बाद में गत सदी के अंत तक इसका निर्धारण अमेरिकी ताकत द्वारा निर्धारित हुआ। यूरोप के मानचित्र में बहुत बड़ा बदलाव हुआ है। शीतयुद्ध के बाद शीत शांति आयी है। ऐसा प्रतीत होता है कि अमेरिका अपनी कई वैश्विक राजनीतिक और आर्थिक प्रतिबद्धता से प्रकट रूप से पीछे हट रहा है। तथापि, केवल अनाड़ी ही यह मानेंगे कि अमेरिकी प्रभुत्व के बहुत कम दिन बचे हैं– अमेरिका वित्तीय और रणनीतिक संदर्भों में मजबूत बने रहेंगे। चीन के आर्थिक अभ्युदय ने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में एक नए प्रतिमान का सृजन किया है। कठोर चीनी नेतृतव द्वारा खडी की गयी चुनौती प्रत्येक मंच पर चर्चा का विषय है। रूस ताकत के क्षेत्र में पिछड़ गया था किंतु अब वह वापस ताकतवर बन कर उभर रहा है। ब्रेक्जिट ने ब्रिटेन को भ्रमित कर दिया है। नयी और अनिश्चित समस्याओं ने समाधान को चुनौती दी है; संपूर्ण विश्व कई ज्ञात और अज्ञात समस्याओं में फंसा है। मानचित्रों के पुनः खींचे जाने और नए देशों के उभरने के साथ वैश्विक समुदाय के समक्ष चुनौतियों में भी बढ़ोत्तरी हुई है। राष्ट्र मंडल के समक्ष नए खतरे हैं। परंपरागत शत्रुता और परंपरागत समस्याओं ने असयंमित और जटिल समीकरणों को खड़ा किया है। विकास ने नए विरोधाभासो का सृजन किया है। उत्पन्न होने वाले खतरों का अकेले और संयुक्त रूप से सामना किया जाना होगा।

अमेरिका–चीन व्यापार वाद–विवाद के समाधान से अधिक अनिश्चित्ता पैदा की है। वैश्विक शक्तियाँ उन चुनौतियों पर वाद–विवाद कर रही है जो चीनी बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव से उत्पन्न हुई है। रूस और इसके नेताओं के प्रति पश्चिमी देशों द्वारा जबरदस्त प्रतिक्रिया के कारण मजबूत रूस–चीन साझेदारी का जन्म हुआ है। पश्चिमी एशिया में स्थिति में लगातार परिवर्तन आ रहा है। वैश्विक आतंकवाद का मुख्य केन्द्र हमारा पड़ोसी देश हैं। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध और विदेश नीति पेचिदगी भरी है।

नयी साझेदारी और गठबंधन आज के विश्व के मानदंड बन गए हैं। वैश्विक विकास के यूरो–अटलांटिक आयाम पूर्व की ओर खिसक गया है। एशिया–प्रशांत और हिन्द प्रशांत क्षेत्र अब वैश्विक सुर्खियां बन चुकी हैं। इक्कीसवीं सदी भारत–प्रशांत क्षेत्र जो अफ्रीका से लेकर प्रशांत महासागर के पश्चिमी भाग तक फैला हुआ है, का है। भविष्य में यहीं स्थान शक्ति का केन्द्र होगा।

अपने राष्ट्रीय हितों को साधने में भारत की विदेश नीति का जोर विभिन्न वैश्विक घटनाक्रमों की प्रतिक्रिया में निरंतर कार्य करते रहने पर है। सामान्यतः कुछ भेदभाव को छोड़कर हमारी विदेश नीति पर जोर देने पर व्यापक राजनीतिक सहमति है।

मुख्य शब्दः– हिन्द महासागर, विदेश नीति, भारत।

भूमिकाः– हमारी विदेश नीति का पड़ोसी देश प्रथम का आयाम हमारी रणनीतिक, राजनीतिक और आर्थिक सुरक्षा के सम्बन्ध में अतिक्रमण करते हुए प्राथमिकता का एक क्षेत्र है। आसियान के देश और जापान हमारी एक्ट ईस्ट नीति के दायरे में आते हैं। पश्चिमी एशिया के देश और खाड़ी के देश हमारी थिंक वेस्ट थ्रस्ट नीति के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। हम संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के स्थायी पांच देशों और यूरोपीय संघ के देशों को महत्व प्रदान करते हैं। अफ्रीका और लातिनी अमेरिका देश तथा कैरिबियाई व ओसनीया देशों पर अब अधिक ध्यान दिया जा रहा है। हमारे नेताओं ने इन क्षेत्रों के देशों का दौरा किया हैं जिन्होंने कभी भी पूर्व भारतीय वीवीआईपी को नहीं देखा था।

इस अभिप्राय में भारत की हिन्द–प्रशांत क्षेत्र के प्रति नीति क्या है? इस क्षेत्र को 1994 में लुक ईस्ट पॉलिसी, 2016 में एक्ट ईस्ट पालिसी की घोषणाओं और हाल की घोषणा में हिन्द–प्रशांत क्षेत्र पर जोर देने के साथ भारत की विदेश नीति में बेहतर तरीके से जोड़ा गया है। 1994 और 2018 में शांग्रिला वार्ता इस क्षेत्र पर भारत की पहुंच के महत्वपूर्ण पहलुओं को बतलाने का एक साझा मंच है।

भारत इंडियन ओसन रिम एसोसिएशन (आई.ओ.आर.ए.) का संस्थापक सदस्य रहा है। इसने इंडियन ओसन नवल सिम्पोजियम (आई. ओ. एन. एस.) की पहल की। भारत की सागर परियोजना इस क्षेत्र में सभी देशों के लिए सुरक्षा और विकास का विचार आदर्श रूप में भारत की हिन्द–प्रशांत नीति के साथ जोड़ता है और अधिक ध्यान केंद्रित करने के लिए विदेश मंत्रालय ने हिन्द–प्रशांत प्रभाग की स्थापना की है।

भारत की पूर्व और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों और उसके परे देशों के साथ सदियों से व्यापक संबंध रहे हैं। भारतीय कला, संस्कृति और धर्म का प्रभाव इनमें से कई देशों में रहा है। बौद्ध धर्म ने इस क्षेत्र में अपनी जड़े मजबूत की हैं जबकि कुछ देशों में हिन्दु धर्म का प्रभाव देखा गया है। इन कई देशों के साथ कलिंग राजाओं का व्यापारिक संबंध रहा तथा पल्लव और चोल राजाओं ने राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से कार्य किया। इन्हें भारत की लुक ईस्ट–एक्ट हिन्द–प्रशांत नीति के विकास का प्रथम गतिविध मानी जा सकती है। एशियाई संबंध सम्मेलन और बागडंग सम्मेलन के कारण इस क्षेत्र के देश और नजदीक आए। हिन्द–प्रशांत क्षेत्र के लिए भारत का विजन जून, 2018 में शांग्रिला वार्ता में अपने संबोधन में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा व्यक्त किया गया। **इस विजन के मुख्य तत्त्वों में शामिल हैंः–**

1. हिन्द–प्रशांत क्षेत्र अफ्रीका के समुद्र तटों से लेकर अमेरिका के समुद्र तटों तक में भारत का अनुबंध समावेशी होगा।
2. एक मुक्त, खुला, समावेशी क्षेत्र जिसमें सभी देश प्रगति और समृद्धि के साझा उद्देश्य शामिल हैं।
3. इसके केन्द्र में दक्षिणपूर्व एशिया है और आसियान इसके भविष्य में है और रहेगा।
4. इस क्षेत्री की साझा समृद्धि और सुरक्षा के लिए वार्ता के माध्यम से साझा नियम आधारित व्यवस्था को तैयार करने की आवश्यकता होगी और इसे सभी देशों पर व्यक्तिगत रूप से और वैश्विक रूप से समान रूप से लागू होना चाहिए।
5. समुद्र और वायु क्षेत्र के साझा इस्तेमा के लिए अन्तर्राष्ट्रीय कानून के तहत सबको समान पहुंच होनी चाहिए जिसके लिए नौवहन, अबाधित व्यापार और अंतर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार विवादों के शांतिपूर्ण समाधान की स्वतंत्रता होगी।

6. इस क्षेत्र को वैश्विकरण से लाभ मिला है। किंतु वस्तुओं और सेवाओं के प्रति सरंक्षणवाद बढ़ रहा है। सरक्षणवाद से नहीं बल्कि बदलाव को सम्मिलित कर इनका समाधान ढूंढा जा सकता है।
7. हिन्द–प्रशांत क्षेत्र में नियम–आधारित, मुक्त, संतुलित और स्थायी व्यापार माहौल को समर्थन। क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी (आरसीईपी) से यही उम्मीद है। आरसीईपी व्यापक होना चाहिए, जैसा कि नाम बतलाता है और इसके घोषित सिद्धांत है। व्यापार, निवेश और सेवाओं में एक संतुलन होना चाहिए।
8. संपर्क महत्वपूर्ण है। यह सवंर्धित व्यापार और समृद्धि से अधिक महत्वपूर्ण कार्य करता है। यह किसी क्षेत्र को आपस में जोड़ता है। इस क्षेत्र में संपर्क संबंधी कई पहले हुई। इसकी सफलता के लिए न केवल अवसरंचना खड़ी की जानी चाहिए बल्कि विश्वास बहाली भी होनी चाहिए और इसके लिय ये पहलें संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता, परामर्श, बेहतर शासन व्यवस्था, पारदर्शिता, अर्थक्षमता और धारणीयता के प्रति सम्मान पर आधारित होनी चाहिए। उन्हें राष्ट्रों को सशक्त बनाना चाहिए न कि उन पर असंभव ऋण बोझ डाल देना चाहिए।
9. प्रतिस्पर्धा सामान्य बात है। किंतु यह प्रतिस्पर्धा विवाद में नहीं बदलना चाहिए, मतभेदों को विवादों में बदलने की अनुमति नहीं होनी चाहिए।

शोध के उद्देश्यः–

1. भारत की विदेश नीति के बारें में जानना।
2. भारतीय विदेश में हिन्द महासागर की महत्ता को जानना।

शोध प्रविधिः– यह शोध पत्र द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित है जिसके लिए पुस्तकों, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय शोध जर्नल में प्रकाशित शोध पत्रों का अध्ययन किया गया है तथा विभिन्न समाचार पत्रों व पुस्तकों से आकड़ों को इकट्ठा किया गया है। इस प्रकाश शोध पत्र हेतु विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

हिन्द महासागर का सामरिक महत्त्व के प्रमुख कारणः– हिन्द महासागर क्षेत्र में किसी बड़ी शक्ति के प्रभाव का अभाव, प्रमुख शक्तियों के द्वारा अपने प्रभाव क्षेत्र अतिरिक्त विस्तार की आकांक्षा, प्रमुख महाशक्तियों में शक्ति की प्रतिस्पर्धा, प्रमुख राष्ट्रों के द्वारा अपनी शक्ति वृद्धि हेतु हिन्द महासागर क्षेत्र में उपलब्ध संसाधनों खनिज भंडारों, परिवहन, पारगमन मार्गों का लाभ प्राप्त कर वैश्विक शक्तियों की प्रतिस्पर्धा में शामिल होना, रबड़, जूट, टिन, सोना, हीरा, पेट्रोलियम परम्परागत ऊर्जा स्त्रोतों के तीव्र गति से समाप्त होने से हिन्द महासागर से नवीनीकरण ऊर्जा–तरंग ऊर्जा, ज्वार ऊर्जा से प्राप्त की जा रही है। अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति संघर्ष की प्रतिस्पर्धा में विरोधी राष्ट्रों की शक्ति वृद्धि को रोकने हेतु राजनीतिक रणनीतिक गठबंधनों की स्थापना, हिन्द महासागर के निकटवर्ती देशों का पश्चिमी एशिया के तेल उत्पादक देशों से तेल प्राप्त करना, इसके अतिरिक्त हिन्द महासागर प्रशांत और अटलांटिक महासागर प्रशांत हिन्द महासागर के बाद तीसरा सबसे बड़ा महासागर है। विश्व के तेल भंडार का लगभग 40 प्रतिशत हिन्द महासागर में है और यह हिन्द महासागर के उत्तर–पश्चिमी भाग पर केन्द्रित है, जो खाड़ी देशों के नाम से जाने जाते हैं। विश्व का 80 प्रतिशत क्रूड ऑयल हिन्द महासागर के माध्यम से पहुंचाया जाता है। राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण चार जलडमरूमध्य–हार्मुज जलडमरूमध्य बाव–एल–मंडव जलडमरूमध्य मलक्का जलडमरूमध्य एवं मोजांबिक चैनल है, जहां से अधिकांश समुद्री व्यापार इनसे होकर गुजरता है जिसके कारण हिन्द महासागर क्षेत्र एक उभरती हुई आर्थिक शक्ति के रूप में आंका जा रहा है।

आर्थिक दृष्टि से विश्व के कच्चे तेल के व्यापार का लगभग 90 प्रतिशत परिवहन हिन्द महासागर के चेक प्वाइंट के रूप में जाने वाले जल के तीन संकरे मार्गों से होकर जाता है। इसमें फारस की खाड़ी और ओमान की खाडी के बीच स्थित होर्मुज का जलडमरूमध्य शामिल है, जो फारस की खाड़ी से हिन्द महासागर तक एकमात्र समुद्री मार्ग प्रदान करता है। भारत दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था है। यह आने वाले दशकों में दुनिया की सबसे बड़ी आबादी व सबसे अधिक क्षमता वाला देश भी होगा। प्रमुख रूप से चीन, दक्षिण कोरिया द्वारा उक्त जलडमरूमध्यों को नियंत्रित किया जा सकता है। विश्व की एक तिहाई जनसंख्या हिन्द महासागर के साथ ही बसी हुई है और यह एक बहुत बडा बाजार है जैसा कि राजनीतिक दृष्टि से हिन्द महासागर सामरिक प्रतिस्पर्धा का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बनता जा रहा है। चीन अपने बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव के हिस्से के रूप में पूरे क्षेत्र में बुनियादी ढाँचागत परियोजनाओं में अरबों डॉलर का निवेश कर रहा है। इस निवेश के माध्यम से चीन हिन्द महासागर के सीमावर्ती देशों में अपनी सामरिक बढ़त को बनाना चाहता है। इसी कारण से भारत, अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन जैसी प्रमुख शक्तियों ने अपनी उपस्थिति बढ़ा दी है।

चीन लगातार इस क्षेत्र में अपनी नौसैन्य शक्ति को बढ़ा रहा है। चीन, पाकिस्तान और श्रीलंका की भांति जिबूती में भी एक नौसैन्य चौकी स्थापित कर रहा है, जो बीजिंग के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। जिबूती में स्थापित नौसैन्य बेस के माध्यम से चीन हिन्द महासागर में स्थित परिवहन मार्गों को नियंत्रित कर सकता है, जिससे भारत की कच्चे तेल और ऊर्जा संबंधी सप्लाई लाइन को काटा जा सकता है। चीन अपनी स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स नीति के अनुसार, भारत को घेरते हुए हिन्द महासागर में स्थित देशों में अपने नौसैन्य अड्डे स्थापित कर भारत पर सामरिक बढ़त हासिल करना चाहता है।

हिन्द महासागर क्षेत्र में भारत की नीतिः–

पिछले कुछ वर्षों में भारत की नीति में इस क्षेत्र के संबंध में बदलाव आया है। पहले भारत की नीति में इस क्षेत्र के लिए अलगाव की स्थिति थी लेकिन अब हिन्द महासागर क्षेत्र के लिए भारत में स्थिरता और सुरक्षा पर जोर दे रहा है। साथ ही इस रणनीति को मूर्तरूप देने के लिए सागरमाला परियोजना पर कार्य कर रहा है, ताकि भारत अपनी तटीय अवसरंचना को सुदृढ़ करके अपनी क्षमता में वृद्धि कर सके। इस तरह भारत न सिर्फ हिन्द महासागर क्षेत्र में अपने हितों को साध सकेगा बल्कि ब्लू इनॉनमी के लक्ष्य को भी प्राप्त कर सकेगा। ब्लू इकॉनमी पर बल देने तथा हिन्द महासागर क्षेत्र के महत्व को देखते हुए ही भारत सरकार बिम्सटेक जैसे संगठनों से समुद्र संबंधों पर पुनः विचार कर नये आयाम जोड रही है। सागर पहले वर्ष 2015 में प्रधानमंत्री मोदी की मॉरीशस यात्रा के दौरान नीली अर्थव्यवस्था पर ध्यान केन्द्रित करने हेतु एक सिद्धांत है। यह एक समुद्री पहल है जो हिन्द महासागर क्षेत्र में भारत की शांति, स्थिरता और समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए हिन्द महासागर क्षेत्र को प्राथमिकता देती है। यह विश्व के सभी देशों की नौ सेनाओं और समुद्री सुरक्षा एजेंसियो के बीय सहयोग को तेज करने के लिए सहयोग प्राप्त करने का एक मंच है। भारत के संपूर्ण क्षेत्र के लिए सुरक्षा प्रदाता की भूमिका निभाते हुए सागर पहल हिन्द महासागर में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यह पहल 1997 में स्थापित हिन्द महासागर क्षेत्रीय सहयोग संघ के सिद्धातों के अनुरूप है।

हिन्द महासागर क्षेत्र में भारत प्रमुख संवादों के माध्यम से अपनी सामरिक साझेदारियों को मजबूत कर रहा है। इस क्षेत्र में भारत के सामने जिस तरह की समुद्री सुरक्षा संबंधी चुनौती खडी है, उन्हें देखते हुए भारत के लिए इस क्षेत्र की अन्य प्रमुख ताकतों के साथ व्यापक और समझदारी भरी साझेदारियां करना जरूरी हो गया है। इनमें बहुपक्षीय और द्विपक्षीय स्तर पर मजबूती से संवाद करना शामिल है। अमेरिका,

आस्ट्रेलिया, जापान के साथ भारत के क्वाड्रीलैटेरल सिक्योरिटी डायलॉग में भारत अपने सामरिक दावं–पेचं के तहत हिन्द महासागर क्षेत्र में कई ऐसी साझेदारियां कर रहा है। भारत का एक ऐसा ही सामरिक साझेदार फ्रांस है भारत ने लम्बे समय से हिन्द महासागर क्षेत्र में अहम भूमिका निभाई है।

भारत और फ्रांस दोनों ही हिन्द महासागर क्षेत्र के बड़े सामरिक तौर पर उभरती हुई शक्तियाँ है जिन्होंने हाल के वर्षों में हिन्द प्रशांत क्षेत्र में अपने साझा हितों को देखते हुए भारत और फ्रांस ने अपने सामरिक साझेदारी बढ़ाने की ओर अग्रसर हुए है। द्विपक्षीय स्तर पर भारत और फ्रांस के बीच बढ़ते सामरिक तालमेल का केन्द्र, दोनों देशों की नौसेनाओं का साझा युद्धाभ्यास वरूण रहा है। 2022 में भारत और फ्रांस के बीच वरूण युद्धाभ्यास का बीसवां संस्करण हुआ, जिससे दोनों देशों के बीच संपर्क का दायरा और भी बढ़ा। इस नौसैनिक अभ्यास के मुख्य लक्ष्य आपस में मिलकर काम करना और इस तरह दोनों देशों की नौसेनाओं का एक दूसरे के पूरक बनाना रहा है। हिन्द महासागर क्षेत्र में चीन की सामरिक गतिविधियां बढ़ने के कारण वरूण जैसे नौसैनिक अभ्यासों के जरिए समुद्री साझेदारी बढ़ाना, भारत और फ्रांस दोनों के हित में है फ्रांस भी इस क्षेत्र में अपने द्वीपों के जरिए हिन्द महासागर के देश की अपनी पहचान को ज्यादा उत्साह से स्वीकार कर रहा है। फ्रांस, रियूनियन द्वीपों को केन्द्र में रखकर हिन्द महासागर में अपनी उपस्थिति को लगातार बढ़ा रहा है।

हिन्द महासागर में फ्रांस की हिस्सेदारी को हम निम्न रूपों में समझ सकते है। हिन्द महासागर में फ्रांस के कब्जे वाले द्वीप रियूनियन एवं मेयोट द्वीप है। हिन्द महासागर के क्षेत्रीय संगठनों इंडियन ओशियन कमीशन, इंडियन ओशियन नेवल सिम्पोजियम में फ्रांस की सदस्यता एवं हिन्द महासागर में फ्रांस का विशेष आर्थिक क्षेत्र पूरे समुद्री क्षेत्र का दस प्रतिशत है। फ्रांस के कुल विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र का 20 प्रतिशत हिस्सा हिन्द महासागर में पड़ता है। 2021 में भारत ने पहली बार फ्रांस के अहम नौसैनिक अभ्यास ला पेरॉस में भागीदारी की थी। इस अभ्यास में भारत के अलावा क्वॉड के तीन अन्य देशों ऑस्ट्रेलिया, जापान और अमेरिका की नौसेनाओं ने भी शिरकत की थी।

प्रारम्भ से ही भारतीय विदेश नीति अपने राष्ट्रीय सुरक्षा तथा राष्ट्रीय हित के उद्देश्यों की प्राप्ति करने के लिए दक्षिण एशिया में बढ़ाए जाने वाले तनाव तथा हिन्द महासागर में समीकरण का विरोध करी आ रही है। भारत की राजनीतिक स्थिति तथा भू सामरिक महत्व के दृष्टिकोण भी बड़ी शक्तियां इस क्षेत्र पर अपना नियंत्रण स्थापित करने के लिए अपने वर्चस्व तथा प्रभाव में वृद्धि करना चाहती है। लेकिन इस क्षेत्र में महाशक्तियों की बढ़ती हलचल से भारत की चिंता स्वाभाविक है। इस प्रकार की सैन्य गतिविधियों से भारत के राष्ट्रीय हित पर सीधा असर पड़ता है। वस्तुतः भारत के व्यापक राष्ट्रीय तथा सुरक्षात्मक और आर्थिक हित इसके शांत बने रहने पर निर्भर करते हैं।

निष्कर्षः– अत': हिन्द महासागर क्षेत्र में रणनीतिक बढ़त हेतु भारत को और अधिक सक्रिय रूप से समुद्री हितों को लेकर नीति को गति देने की आवश्यकता है, जिससे इस क्षेत्र में विकसित हो रही परिस्थितियों में वह प्रमुख भूमिका निभा सके। अतः भारत द्वारा सागर पहल पर बल देना होगा और इसके लिए एक ऐसे ढाँचे का निर्माण करना होगा जिसे उचित रूप से क्रियान्वित किया जा सके। भारत द्विपक्षीय, त्रिपक्षीय और बहुपक्षीय साझेदारियों के माध्यम से हिन्द महासागर क्षेत्र में अपनी स्थिति को मजबूत कर सकता है और इसके लिए भारत को सागरमाला परियोजना पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है। यह परियोजना अवसरंचना को तटीय भागों में सुदृढ़ करेगी, जिससे विनिर्माण, व्यापार तथा पर्यटन को प्रोत्साहन मिलेगा। विश्व के लगभग सभी देश समुद्र में स्वतंत्र नौ–परिवहन को लेकर एक मत है, लेकिन विभिन्न देशों में नौ–परिवहन की स्वतंत्रता की परिभाषा को लेकर गहरे मतभेद बने हुए है। इसका कारण कई देशों के

कानूनों को अंतर्राष्ट्रीय समुद्री कानून से भिन्न होना है। इस विषय पर भारत अन्य देशों के मध्य मतभेदों को समाप्त करने और एक निश्चित परिभाषा पर सहमत होने के लिए नेतृत्व की भूमिका निभा सकता है। भारत को चाहिए कि वह हिन्द महासागर क्षेत्र में अपनी पहुँच में वृद्धि करें। परिचालन द्वारा भारत अपनी उपस्थिति को इस क्षेत्र में मजबूती से दर्ज कर सकता है। यह इस क्षेत्र में भारत के दीर्घकालीन हितों की पूर्ति करेगा, साथ ही इस क्षेत्र की स्थिरता को भी मजबूती प्रदान करेगा। इस क्षेत्र में भारत के जापान जैसे सहयोगी पहले से ही मौजूद है, जो भारत को आवश्यकता के समय लॉलिस्टिक स्पोर्ट उपलब्ध करा सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. शर्मा, डॉ० मथुरालाल 1985 "अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध": 1945 से कॉलेज बुक डिपो (जयपुर)।
2. हिन्द महासागर–"शान्ति और सुरक्षा की समस्याएँ", (पृ० सं. 11) फडिया, बी. एल. 1996 'अन्तर्राष्ट्रीय संबंध' साहित्य भवन, आगरा (उ० प्र०)6।
3. नेयर के. के. (2005) "मेरीटाईम इंडिया", रूपा एण्ड को० प्रकाश नई दिल्ली कॉपलान, राबर्ट डी. (2010) "मानसून द इण्डियन ओशियन एण्ड द फयूचर ऑफ अमेरिकन पॉवर" रेडम हाउस ट्रेड पेपरबेक्स पब्लिकेशन, अमेरिका।
4. कॉपलान, राबर्ट डी (2010) मानसून द इंडियन ओशियन एण्ड द फ्यूचर ऑफ अमेरिकन पॉवर रेडम
5. मायो, के. एम. एम. (2011), चीन और हिन्द महासागरः 21वीं सदी में रणनीतिक रूचियाँ, प्रकाशकः लघु प्रेस।
6. वाल्को, आई., जे. लैंडोव्स्की और आर., मार्टिन (2014): 21वीं सदी की सत्ता राजनीति में रणनीतिक क्षेत्रः आम सहमति के क्षेत्र और संघर्ष के क्षेत्रः प्रकाशकः कैम्ब्रिज स्कॉलर्स प्रकाशक।
7. एफ., सीथारा (2015): संयुक्त राज्य अमेरिका–चीन–भारत, हिन्द महासागर क्षेत्र में सामरिक त्रिकोणः प्रकाशकः ओयूपी इंडिया।
8. मुखर्जी, एम. एवं गौड, आर. एस. (2015): हिन्द महासागर क्षेत्र में चीन, प्रकाशकः एलाइड पब्लिशर्स प्रा. सीमित।
9. ऑर्टोलैंड, डी., पिराट, जे. पी. ओर वेरेट, टी., (2017): महासागरों के भू–राजनीतिक एटलसः समुद्र का कानून, परिसीमन के मुद्दे, समुद्री परिवहन और सुरक्षा, अंतर्राष्ट्रीय जलडमरूमध्य, समुद्री संसाधनः प्रकाशकः तकनीक
10. झू, सी. (2017): भारत का महासागर, क्या चीन और भारत एक साथ रह सकते हैं? प्रकाशकः स्प्रिंगर सिंगापुर।
11. ब्रूस्टर, डी., (2018), समुद्र में भारत और चीनः हिन्द महासागर में नौसेना प्रभुत्व के लिए प्रतिस्पर्धाः प्रकाशकः ओयपूी इंडिया।
12. आजम, के. जे. (2019): हिन्द महासागरः द न्यू फ्रंटियर, प्रकाशकः टेलर और फ्रांसिस।
13. ग्रेरे, एफ. और समन, जे. एल. (2023):एक नए राजनीतिक और सुरक्षा क्षेत्र के रूप में हिन्द महासागर, प्रकाशकः स्प्रिंगर इंटरनेशनल पब्लिशिंग।